4 नवम्बर, 2009 को 1630 बजे सम्मेलन कक्ष, 6, मौलाना आज़ाद रोड, नई दिल्ली में प्रो. मुशीरुल हसन द्वारा संपादित "इस्लाम इन साउथ एशिया" नामक पुस्तक माला के विमोचन समारोह में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

'पुस्तक विमोचन' एक अत्यंत साधारण अभिव्यक्ति है जो किसी पुस्तक के लेखन या संकलन में किए गए बौद्धिक एवं शारीरिक प्रयासों के साथ पूर्ण न्याय नहीं कर पाती। 'अनावरण' अपेक्षाकृत सुंदर तथा अधिक प्रत्याशामूलक शब्द है। यह अज्ञात से ज्ञात की ओर बढ़ने का संकेत देता है।

इस पारिभाषिक विषय का, कम-से-कम अपनी संतुष्टि के अनुसार, समाधान करने के पश्चात्, मैं यह कहना चाहता हूं कि आज के इस समारोह के साथ जुड़कर मैं आनंदित हूं। प्रोफेसर मुशीरूल हसन का इन श्रोताओं अथवा किन्हीं अन्य श्रोताओं से परिचय कराने की आवश्यकता नहीं है। एक इतिहासकार के रूप में उनकी ख्याति के बारे में बताने की कोई जरूरत नहीं है। बौद्धिक इतिहास और संस्कृति की बारीकियों को खोजने और दबी हुई आवाजों को जानने की उनकी क्षमता हमारे इतिहास के एक ऐसे काल की समझ में एक आयाम जोड़ती है जिसमें नयी चुनौतियों ने जीवन की परम्परागत शैली को बाधित किया और पीड़ादायक समायोजनों को प्रवृत किया।

आज हमारे पास इस पुस्तक का केवल एक ही खण्ड नहीं है, बल्कि छह खण्डों का एक सेट मौजूद है। यह स्वयं में ही थोड़ा अद्वितीय है। इन सबमें वही है जिसका वर्णन इब्न खाल्दुन ने 'प्रच्छन्न बुद्विमत्ता की स्थिति में असाधारण ज्ञान और घनिष्ठता' के रूप में किया है। इन सबमें एक साथ दो शताब्दियों की अवधि में दक्षिण एशिया के मुस्लिमों और मुस्लिम समुदायों से उद्‌भूत या उनसे संबंधित व्यापक विचारों का समावेश है। यह धार्मिक प्रतीकों

और दुनिया की दैनिक वास्तविकता के बीच संवाद और इनके बीच अन्तर्क्रियाओं का इतिहास है। यह संकलन विषयबद्ध है और प्रत्येक विषय का वर्णन विविध अभिव्यक्तियों के माध्यम से अर्थपूर्ण ढंग से किया गया है। प्रत्येक खण्ड में सम्पादक द्वारा दी गई भूमिकाओं को सावधानीपूर्वक पढ़े जाने की आवश्यकता है क्योंकि इनसे वैचारिक दृष्टिकोण का पता चलता है। इनका उद्देश्य दक्षिण एशिया में मुस्लिम विचार और पद्धति के महत्वपूर्ण तथा प्राय: अनदेखे पक्षों को उद्‌घाटित करना और सामाजिक हितों के अत्यन्त व्यापक परिप्रेक्ष्य में नानाविध विचारों को चित्रित करना है।

मित्रो,

यह अफसोस की बात है कि हम एक ऐसे युग से गुजर रहे हैं जिसमें लगता है कि 'इस्लाम के भूत' ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अनेकानेक लोगों के मन-मस्तिष्क को आक्रांत कर रखा है। वर्तमान में, धर्म और संस्कृति के गम्भीर अध्ययन का स्थान अस्तित्व के खतरे की कृत्रिम संकल्पना ने ले लिया है। इसलिए, *इस्लाम इन साउथ एशिया* पर लिखे गए इन खण्डों का प्रकाशन समसामयिक है। मोटे तौर पर, दुनिया की कुल 1.57 बिलियन आबादी में से 480 मिलियन मुस्लिम आबादी दक्षिण एशिया में निवास करती है। लगभग एक हजार वर्षों से ये अन्य आस्थाओं तथा संस्कृतियों के संदर्भ में आते रहे हैं। उनका अनुभव विशिष्ट है और उनका योगदान उल्लेखनीय है। इनके गहरे अध्ययन से ऐसे मिथक और रूढ़ियाँ ध्वस्त हो जाएंगी जो विचारशून्यता से विकसित या उद्‌भुत हो गई हैं। शायर अकबर इलाहाबादी ने एक शताब्दी पहले इसे निराशापूर्ण ढंग से महसूस किया था और अल्लाह से उसमें सुधार की दुआ की थी:

बेहद वो खफा हैं अकबर से और उसकी दुआ ये है कि उन्हें
अल्लाह बसीरत ऐसी दे अपनी गलती को देख सकें

प्रोफेसर मुशीरूल हसन का दृष्टिकोण ज्यादा व्यावहारिक है: मुझे विश्वास है कि उनके छह खण्डों से इस *बसीरत* की खोज में मदद मिलेगी।